This question paper contains 4 printed pages. Roll No. ....................................

B.A. (Part-II) Hindi Lit.-I

2102-I (Regular) 429078

# B.A. (Part-II), Examination, 2022

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-II]

(Three Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

# HINDI LITERATURE-I

## ( रीतिकाल )

Paper – I

**Time Allowed : Three Hours** **Maximum Marks : 100**

**समय : 3 घंटे** **अधिकतम अंक : 100**

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित है।

**किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।**

downloaded from StudentSuvidha.com

1. निम्नांकित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

(क) औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौर-भीर, (10)

औरै डौर झौंरन में बौरन के है गये।

कहै पद्माकर, सु औरै भाँति गलियान,

छलिया छबीले छैल औरै छवि छ्वै गये।।

औरै भाँति बिहग-समाज में अवाज होति,

ऐसे रितु-राज के न आज दिन है गये।

औरै रस, औरै रीति, औरै राग, औरै रंग,

औरै तन, औरै मन, औरै वन है गये।।



Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

अथवा

बारै तें न पलक लागत बिनु साँवरे ते, (10)

बावरे अजान ऊधो भले उपदेश हैं।

ता दिन ते वन सूनो घरू हैं दहत दूनो,

तारनि में ज्योति नहीं जटा भये केस हैं।।

'आलम' बिहात छिन जनो जात कोटि दिन,

कौन रैन की समाई सुरति न नैस हैं।

हम हू ते स्याम दूरि स्यामहू ते हम दूरि

वै तो आछे काछे स्याम सखि मैले भेस हैं।।

(ख) ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी ऊँचे घोर मंदर के रहाती हैं। (10)

कंद मूल भोग करैं कंद मूल भोग करैं तीन बेर खाती ते वै तीन बेर खाती हैं।

भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग बिजन डुलाती ते वैं बिजन डुलाती हैं।

भूषन भनत सिवराज बीर तेरे त्रास नगन जड़ाती ते वै नगन जड़ाती हैं।।

अथवा

जासौं प्रीति ताहि निठुराई सो निपट नेह, (10)

कैसे करि जिय की जरनि सो जताइयै।

महानिरदई दई कैसे कै जिवाऊँ जीव,

वेदनि की बँढवारि कहाँ लौं, दुराइयै।।

दुख को बखान करिबे कौं रसना कै होति,

ऐसैं कहूँ वाकों मुख देखन न पाइये।

रैन-दिन चैन को न लेस कहूं पैयै, भाग,

आपने ही ऐसे, दोष काहि धौं लगाइयै।।

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात। (10)

भरे भौन में करत हैं, नैननु हीं सौं बात।।

मरतु प्यास पिंजरा पर्‌यौ सुवा समै कै फेर।

आदरू दै दै बोलियतु बायस बलि के बेर।।



downloaded from StudentSuvidha.com

Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

अथवा

मानहु प्रबाल ऐसे ओठ लाल लाल, भुज, (10)
कंचन मृनाल तन चंपक की माल है।
लोचन बिसाल, देखि मोहे गिरधर लाल,
आज तुही वाल तीनि लोक मैं रसाल है।।
तेहि तरूनाई सेनापति बनि आई, चाल,
चलति सुहाई मानौ मंथर मराल है।
नैंकि देखि पाई, मो पे बरनी न जाई, तेरी,
देह की निकाई सब गेह की मसाल है।।

(घ) डार द्रुम पालना बिछौना नव पल्लव के, (10)
सुमान झंगोला सोहै तन छवि भारी दै।
पवन झुलावै केकी कीर बतरावै 'देव',
कोकिल हलावै हुलसावै करतारी दै।
पूरित पराग सों उतारा करें राई लौन,
कुंदकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक वसन्त ताहि,
प्रातहिं जगावत गुलाब चटकारी दैं।।

अथवा

अरूणगात अति प्रात पद्मिनी-प्राणनाथ मय। (10)
मानहुँ केसवदास कोकनद कोक प्रेममय।
परिपूरन सिंदूर पूर कैधौ मंगलघट।
किधौ शक्र को छत्र मढ्यो मानिक मयूख-पट।।
कैं श्रोनित कलित कपाल यह, किल कापालिक काल को।
यह ललित लाल कैधो लसत दिग्भामिनि के भाल को।।

2\. "बिहारी एक सफल मुक्तक कवि थे" कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

सेनापति की काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।



downloaded from StudentSuvidha.com
Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com

3. "देव आचार्य कवि थे, रीतिकालीन कवियों में उनका शृंगार वर्णन बहुत ही आकर्षक है।" इस कथन की समीक्षा कीजिये।

**अथवा**

"रीतिकालीन स्वच्छन्द काव्यधारा के कवियों में आलम का महत्व निरूपित कीजिये। (15)

4. पद्माकार के काव्य में प्रकृति चित्रण वेहद आकर्षक है, स्पष्ट कीजिये। (15)

**अथवा**

केशव "कठिन काव्य के प्रेत है।" उक्ति को स्पष्ट कीजिये।

5. "भूषण राष्ट्रीय कवि थे।" इस कथन की समीक्षा कीजिये। (15)

**अथवा**

घनानन्द के काव्य की भाषा सम्बन्धी विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये।

❑❑❑

downloaded from StudentSuvidha.com



Download all NOTES and PAPERS at StudentSuvidha.com